राज्यपाल सचिवालय, बिहार
(जन–सम्पर्क शाखा)
राजभवन, पटना–800022

ई–मेल–**pr.rajbhavan@gmail.com**
prrajbhavanbihar@gmail.com
मोबाईल–9431283596

प्रेस–विज्ञप्ति

महामहिम राज्यपाल ने श्रीमती ममता मेहरोत्रा की पुस्तक 'जयप्रकाश तुम लौट आओ' को लोकार्पित किया

पटना, 12 अक्टूबर 2019

''जो कौम अपने पुरखों की बातों को याद नहीं रखती, वह अपने इतिहास और सांस्कृतिक जड़ों से कट जाती है। आज जरूरत है कि ऐतिहासिक–सांस्कृतिक विरासतों और अपने महापुरूषों की वाणियों और संदेशों से प्रेरणा लेकर एक नये भारत, विचारवान भारत, सर्वसमावेशी भारत, स्वाभिमानी भारत और विश्वबंधुत्व की भावना में विश्वास रखनेवाले भारत के नवनिर्माण में हम सभी तत्पर हो जाएँ। जयप्रकाश जी तब स्वतः लौट आएँगे, जब उनके विचारों और दर्शन को हम अपने भीतर उतार लेंगे। ऐसा हो जाने पर वे हम सबके भीतर और इस देश के भीतर जीवंत हो उठेंगे।''–उक्त उद्‌गार, महामहिम राज्यपाल श्री फागू चौहान ने आज राजभवन के दरबार हॉल में आयोजित समाजसेवी एवं प्रसिद्ध लेखिका श्रीमती ममता मेहरोत्रा लिखित तथा प्रभात प्रकाशन द्वारा सद्यः प्रकाशित पुस्तक –'जयप्रकाश तुम लौट आओ' को मुख्य अतिथि के रूप में लोकार्पित करते हुए व्यक्त किये।

लोकार्पण–समारोह में राज्यपाल ने कहा कि लोकनायक जयप्रकाश जी का जब हम स्मरण करते हैं तो हमें न केवल भारतीय–स्वतंत्रता–संग्राम याद आ जाता है, जिसकी बदौलत हम 1947 ई॰ में आजाद हुए थे, बल्कि आजादी की वह दूसरी लड़ाई भी हमारे दिमाग पर दस्तक देने लगती है, जिसके जरिये हमें उस 'आपातकाल' से छुटकारा मिला था, जो स्वतंत्र लोकतांत्रिक भारत का सबसे बड़ा 'काला अध्याय' माना गया है। श्री चौहान ने कहा कि लोकनायक ने बिहार की इस पावन भूमि से 'सम्पूर्ण क्रांति' का जो शंखनाद किया था, उसकी अनुगूंज पूरे भारतवर्ष में लोगों ने सुनी थी और देश से तानाशाही हुकुमत का खात्मा हो गया था। जयप्रकाश जी के सिद्धांतों में आस्था रखनेवाले उनके अनुयायी बाद में कई प्रदेशों में सत्ता में आये और उनके विचारों पर अमल की भरपूर कोशिश की। उन्होंने कहा कि जयप्रकाश जी का व्यक्तित्व इतना विराट और उदार था कि वे अपने राजनीतिक विरोधियों को भी कभी अनादर से नहीं देखते थे। किन्तु, अपने सिद्धांतो को लेकर अडिगता कोई जयप्रकाश जी से सीखे। राज्यपाल के कहा कि कई अवसर आये जब जयप्रकाश जी देश की बागडोर स्वयं सँभाल सकते थे, लोग ऐसा चाहते भी थे, परन्तु भारतीय राजनीति के इस 'अजातशत्रु' ने तो जैसे त्याग और संघर्ष को ही अपना जीवन–मंत्र मान लिया था। भारतीय राजनीति को आज जे॰पी॰ से इसी राजनीतिक सदाशयता, त्याग, ईमानदारी और तपस्या की सीख लेनी चाहिए।

समारोह में बोलते हुए राज्यपाल श्री चौहान ने कहा कि बिहार की धरती में ही संघर्ष और प्रतिभा के अनगिनत बीज छिपे रहते हैं। उन्होंने कहा कि बिहार की राजनीतिक–सामाजिक सोच काफी प्रखर है। राज्यपाल ने कहा कि दरअसल बिहार की सामाजिक–राजनीतिक संचेतना इतनी विकसित है कि बिहार जो आज सोचता है, वही कल पूरे देश की आवाज बन जाती है। 'संपूर्ण क्रांति' का आंदोलन इसकी ज्वलंत मिशाल है।

आगे पृष्ठ....2 पर

राज्यपाल श्री चौहान ने पुस्तक की लेखिका श्रीमती ममता मेहरोत्रा को बधाई देते हुए कहा कि लेखिका ने कविताएँ, कहानियाँ उपन्यास, नाटक तो लिखे ही हैं, शिक्षा का अधिकार, महिला अधिकार, समय–प्रबंधन, महिलाओं के विरूद्ध अपराध, लैंगिक समानता बच्चों के लिए चुटकुले –आदि विषयों से संबंधित किताबें भी लिखी है। राज्यपाल ने कहा कि आज जिस पुस्तक का लोकार्पण हुआ है, यह काफी रोचक, तथ्यपूर्ण और शोधमूलक है। इसका शीर्षक भी काफी संवेदनापूर्ण और भावात्मक है।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बिहार विधान सभा के अध्यक्ष श्री विजय कुमार चौधरी ने कहा कि लोकनायक के नेतृत्व में 'संपूर्ण क्रांति' के आन्दोलन में बिहार की क्रांति की आवाज पूरे देश में गूंजी थी और तत्कालीन सत्तासीन पदच्यूत हो गए थे। श्री चौधरी ने कहा कि 'संपूर्ण क्रांति' एक व्यापक आयाम वाली अवधारणा थी, जिसमें आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक सभी क्षेत्रों में क्रांतिमूलक परिवर्तन की बात शामिल थी। श्री चौधरी ने अपने सारगर्भित संबोधन में एक प्रासंगिक राजनीतिक महानायक पर पुस्तक–लेखन के लिए लेखिका को बधाई दी तथा उनके 'बिहार–प्रेम' को भी रेखांकित किया। विधान सभाध्यक्ष श्री चौधरी ने लेखिका श्रीमती ममता मेहरोत्रा को मानवीय रिश्तों, जीवन–मूल्यों और संवेदना को सूक्ष्म रूप से विश्लेषित करनेवाला एक प्रतिभाशाली साहित्यकार बताते हुए उनकी नयी पुस्तक के लिए उन्हें शुभकामनाएँ दी।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पुस्तक की लेखिका श्रीमती ममता मेहरोत्रा ने कहा कि 'लोकनायक जयप्रकाश' एक सम्पूर्ण विचारधारा का नाम है। उन्होंने कहा कि पुस्तक में जयप्रकाश जी के जीवन–दर्शन के अनछूये प्रसंगों को प्रस्तुत किया गया है। श्रीमती मेहरोत्रा ने कहा कि लोकनायक जयप्रकाश जी के सम्पूर्ण जीवन में संघर्ष और त्याग महत्वपूर्ण पहलू हैं। उनमें सामाजिक परिवर्तन और समरसता की प्रबल पक्षधरता देखने को मिलती है। लेखिका ने लोकनायक जयप्रकाश के विचारों और जीवन–दर्शन को पाठ्यक्रमों में महत्वपूर्ण रूप से शामिल करने का भी अनुरोध किया।

कार्यक्रम में महामहिम राज्यपाल श्री फागू चौहान, माननीय अध्यक्ष बिहार विधान सभा श्री विजय कुमार चौधरी, राज्यपाल के अपर मुख्य सचिव श्री ब्रजेश मेहरोत्रा, उत्तर प्रदेश के युवा नेता एवं समाजसेवी श्री रामविलास चौहान एवं पुस्तक की लेखिका श्रीमती ममता मेहरोत्रा को अंगवस्त्रम्, पुष्प–गुच्छ, स्मृति–चिह्न एवं पुस्तकोपहार से राजधानी के विभिन्न प्रबुद्ध नागरिकों द्वारा अभिनंदित भी किया गया।

कार्यक्रम में स्वागत–भाषण प्रभात प्रकाशन के प्रतिनिधि–अधिकारी श्री राजेश शर्मा एवं धन्यवाद–ज्ञापन राज्यपाल के जनसम्पर्क अधिकारी डॉ॰ सुनील कुमार पाठक द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ॰ ध्रुव कुमार ने किया।

समारोह में पाटलिपुत्र एवं नालंदा खुला विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो॰ गुलाब चन्द राम जायसवाल, आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ॰ ए॰के॰ अग्रवाल, प्रतिकुलपति डॉ॰ एस॰एम॰ करीम, मौलाना मजहरूल हक अरबी–फारसी विश्वविद्यालय, पटना के कुलपति प्रो॰ खालिद मिर्जा, श्रीमती विभा सिंह, श्रीकांत सत्यदर्शी, प्रो॰ शिवनारायण, समीर परिमल, नीतू कुमारी नवगीत, आशुतोष मेहरोत्रा, अरविन्द सिंह, पंकज सिंह, डॉ॰ अशोक सिन्हा, डॉ॰ संजय सहित अनेक साहित्यकार, कलाकार, चिकित्सक, अधिवक्ता, पदाधिकारी, समाजसेवी गणमान्य जन आदि उपस्थित थे।

.....